5

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

अपने साथी की आवश्यकताएं पूरा करने से

विवाह होने पर आप एकाकी जीवन को त्याग देते हैं। आप अपना शेष जीवन दूसरे व्यक्ति के प्रति समर्पित करने का वचन लेते हैं। इसका अर्थ यह है कि आप उस व्यक्ति की भलाई की ज़िम्मेदारी को मान लेते हैं।[1] विवाह का उद्देश्य केवल अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना ही नहीं है; इसका उद्देश्य अपने साथी की आवश्यकताओं को पूरा करना भी है।

वास्तव में, अपने साथी की आवश्यकताओं को पूरा करना ही प्रेम का सार है। जब किसी से सचमुच वैसे ही प्रेम करते हैं जैसा प्रेम बाइबल में करने को कहा गया है, तो आपकी पहली दिलचस्पी उस व्यक्ति की भलाई होगी। जब आप अपने पति या पत्नी से मसीही प्रेम करते हैं तो आप उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने का हर सम्भव प्रयास करेंगे।

आपके साथी की कौन-सी आवश्यकताएं हैं ?[2]

शारीरिक आवश्यकताएं

स्पष्टतया आपके साथी की शारीरिक आवश्यकताएं भी हैं। आप दोनों को रोटी, कपड़ा और मकान चाहिए। नये नियम में पति को अपने परिवार की भौतिक आवश्यकताएं पूरी करने की खास ज़िम्मेदारी को पूरी गंभीरता से लेना चाहिए (1 तीमुथियुस 5:8)। इसे सुस्ती से नहीं लेना चाहिए, जान-बूझकर काम को टालने वाला या कोई काम करने में असमर्थ न हो। कई बार उसे परिवार की भलाई के लिए अपने सपनों को पूरा करने का काम टालना पड़ता है। पत्नी को घर को चलाने की ज़िम्मेदारी दी गई है (1 तीमुथियुस 5:14; तीतुस 2:5), घर को व्यवस्थित रखने की कि इस तरह परिवार की भौतिक और भावनात्मक आवश्यकताओं में वह अपना योगदान दे सकती है। इसके साथ ही हर एक को दूसरे के स्वास्थ्य की चिन्ता होनी चाहिए। पत्नी की बीमारी के प्रति पति को वैसे ही चिन्ता करनी चाहिए जैसे वह अपनी बीमारी की करता है। दोनों को एक-दूसरे की देखभाल करनी चाहिए।

विवाह के बाद भौतिक आवश्यकताओं में शारीरिक आवश्यकता भी शामिल है, जिसे पूरा किया जाना चाहिए। विवाह में दोनों को एक-दूसरे की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने की ज़िम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:3-5)।

सामाजिक आवश्यकताएं

इसके साथ ही हर विवाहित साथी की अपनी सामाजिक आवश्यकताएं भी होती हैं। जिन्हें दूसरा साथी पूरा करने में सहायता कर सकता है। हर एक को साथी और मित्र की आवश्यकता होती है-समाज का एक भाग बनने की, जिसमें आपके साथियों के साथ मिलकर एक-दूसरे की सहायता की जाए और एक-दूसरे को उत्साहित किया जाए।

बेशक, पति-पत्नी को एक-दूसरे के सच्चे मित्र और नज़दीकी साथी होना चाहिए। परमेश्वर ने स्त्री को इसलिए बनाया कि पुरुष अकेला न रहे, तथापि पति की दोस्ती पत्नी की हर सामाजिक आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकती।[3] एक स्त्री अपनी सहेलियों की आवश्यकता को पूरा कर सकती है; पुरुष कभी-कभार पुरुषों की मण्डली में बैठना पसन्द करता है-मछली पकड़ने या शिकार करने के लिए, एथलेटिक मीट का आनन्द लेने के लिए या किसी विषय पर चर्चा करने के लिए। पति-पत्नी को एक-दूसरे की आवश्यकताओं का समझना चाहिए और अपने आप को ठुकराया हुआ महसूस न करे। यदि आपका साथी अपने साथियों के साथ कुछ समय बिताना चाहता है। पति/पत्नी को एक-दूसरे को अपनी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उत्साहित करना चाहिए। बेशक पति-पत्नी के बीच दोस्तों का झुण्ड कभी नहीं आना चाहिए।

भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं

इसके अतिरिक्त पति-पत्नी को एक-दूसरे की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने की चिन्ता करनी चाहिए।

आवश्यकताएं जो पुरुष और स्त्री दोनों की होती हैं

पुरुष और स्त्री की मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक आवश्यकताएं एक सी होती हैं, पर हो सकता है कि उन की पूर्ति एक ही तरह से न हो। दोनों के मन में प्रेम किए जाने, सराहे जाने और महत्व दिए जाने की भावना होती है। दोनों को यह मानते हुए कि वे अपने समाज और परिवार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं अपने आप को उपयोगी और योग्य समझना आवश्यक है। सब लोग अपनी क्षमता से कुछ प्राप्त करना और यह जानना चाहते हैं कि उनके जीवनों का कुछ अर्थ है। पुरुष और स्त्री दोनों किसी संस्था जैसे परिवार, कलीसिया, श्रम संगठन, जन या राजनैतिक दल या किसी राष्ट्रीय दल के महत्वपूर्ण सदस्य बनना चाहते हैं जो समाज में उनकी पहचान बनाने में सहायक हो। थोड़ी बहुत हर किसी में अपने साथियों की सहमति, और अपने भविष्य की सुरक्षा की चाहत होती ही है।

पुरुष और स्त्री में चाहे भिन्नताएं हैं, पर पति और पत्नी में से दोनों को एक दूसरे की भावनाओं को समझना चाहिए। अपने आपको अपने साथी की जगह रख कर देखें। पूछें, ''मेरे पति या मेरी पत्नी को यह कैसा लगेगा?''

उदाहरणतया, पुरुष अपनी कद्र अपने काम से ही आंकता है, यानी अगर पुरुष का काम असफल हो जाता है या यदि उसकी नौकरी चली जाती है, तो वह निराश हो जाता है, और अपने को नकारा समझने लगता है। (तब उसे साथ रहना अप्रिय लग सकता है।) ऐसे में उसकी पत्नी को उसे प्रोत्साहित करना और उसकी भावनाओं को समझना आवश्यक है।

दूसरी ओर बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो स्त्री को अपना ''घोंसला खाली खाली'' लगने लगता है। उसके पति को उसकी ज़रूरतों को समझते हुए उन्हें पूरा करने की कोशिश करनी आवश्यक है। पति को अपनी पत्नी को बताना आवश्यक है कि जो काम वह अब कर रही है वह प्रशंसनीय है और उसकी महत्ता को समझने में उसकी सहायता करनी चाहिए।

विशेषकर पति को अपनी पत्नी की भावनाओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। आमतौर

पर पति अपनी पत्नियों की भावनाओं से अनभिज्ञ ही होते हैं। पुरुषों की प्रवृत्ति ही ऐसी है कि वह तथ्य के बारे में सोचते हैं और अपनी पत्नियों की भावनाओं को तिरस्कार की नज़र से देखते हैं। पुरुषों को यह समझने की आवश्यकता है कि भावनाएं ही सच्चाई/तथ्य हैं। तथ्य चाहे कुछ भी हों, यह सच है कि पत्नियों के सोचने का ढंग अलग ही होता है। उसकी भावनाएं उसकी खुशी और उसके विवाहित जीवन की खुशी के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं, उससे भी बढ़कर जिसे वह सच्चाई मानता है। एक मसीही पति के लिए चाहे यह काम कितना मुश्किल क्यों न हो उसे अपनी पत्नी की भावनाओं का उत्तर देना सीखना होगा। जहां तक हो सके, पति को चाहिए कि वह कुछ भी करके अपनी पत्नी को खुश रखे, उसी तरह पत्नी को भी अपने पति को खुश रहने में सहायता करनी चाहिए।

पुरुषों और स्त्रियों की विशेष आवश्यकताएं

पति और पत्नी दोनों की कुछ अतिरिक्त आवश्यकताएं होती हैं, जिन्हें दूसरा पूरी कर सकता है। जेम्स बेयर्ड जब ओक्लाहोमा क्रिश्चियन कॉलेज के प्रेसीडेंट थे तब उन्होंने सिडनी ऑस्ट्रेलिया में अपने एक भाषण में विवाह पर व्याख्यान दिया। एक बात जिसकी ओर उन्होंने ध्यान दिलाया वह यह थी कि अध्ययन से पता चला है कि स्त्रियां और किसी भी बात से अधिक प्रेम की इच्छुक होती हैं; और पुरुष सब बातों से बढ़कर सम्मान को महत्व देते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि बाइबल इन मुख्य आवश्यकताओं को तृप्ति प्रदान करती है। पति को अपनी पत्नी को क्या देना चाहिए? प्रेम! इफिसियों 5:25 कहता है, ''हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसे लिए दे दिया है।'' पत्नियों को अपने पतियों को क्या देने की आवश्यकता है? अधीनता, या इज्जत! (देखें इफिसियों 5:22-24.) दूसरे शब्दों में यदि पति-पत्नी का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति बिल्कुल वैसा है जैसा बाइबल में सिखाया गया है तो वह एक-दूसरे की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा कर रहे हैं।[4]

स्त्री की प्रेम की आवश्यकता। पुरुष को अपनी स्त्री से नि:स्वार्थ प्रेम करना चाहिए जो उसके लिए हमेशा अच्छाई की खोज में रहता हो। बेशक, पति के लिए जितना आवश्यक उससे प्रेम करना है, उतना ही अपने कामों और बातों के द्वारा प्रेम दिखाना भी है। पत्नी प्रेम की इच्छुक ही नहीं होती, वह उस प्रेम को अनुभव भी करना चाहती है।

पुरुष को सम्मान की आवश्यकता। स्त्री को चाहिए कि वह अपने पति का आदर करे। पुरुष भी प्रेम का अनुभव करना चाहता है, पर किसी भी और बात से बढ़कर उसे यह पता होना आवश्यक है कि वह एक पुरुष है और उसे आदर और सम्मान मिलता है। पत्नी उसे पुरुष बने रहने देकर इस आवश्यकता को पूरा कर सकती है-बल्कि पत्नी उससे विवाह होने और के कारण अपना ''मर्दों वाला'' रौब त्याग देने को विवश न करके, स्वेच्छा से घर में पति की अगुआई को मानकर उसको आदर दे सकती है। इसके अलावा पत्नी घर में उसकी अगुआई को मानने के लिए अपनी इच्छा जताने का संकेत देकर अपने पति को आदर कर सकती है। जैसे पति अपनी पत्नी की प्रेम की आवश्यकता को पूरा करके लाभ प्राप्त कर सकता है, वैसे ही स्त्री भी देखेगी कि यदि वह अपने पति का आदर करती है और उसे प्रेम देती है तो पति भी बड़ी उदारता से

उसे ग्रहण करेगा!

आत्मिक आवश्यकताएं

इसके अलावा पति-पत्नी की आत्मिक आवश्यकताएं भी होती हैं, जिन्हें पूरा करने में वे एक-दूसरे की सहायता कर सकते हैं। बेशक किसी भी बात से बढ़कर उन्हें उद्धार पाने, अपने पापों की क्षमा पाकर, स्वर्ग में जाने की आवश्यकता है! स्वर्ग में जाने के लिए उन्हें कलीसिया के सक्रिय सदस्य होना आवश्यक है। कलीसिया में उन्हें सदस्य बनने की समझ आती है। एक पहचान मिलती है कि वे किसी अच्छे काम में शामिल हैं।

पति-पत्नी को चाहिए कि वे आत्मिक रूप में एक-दूसरे की उन्नति करें। यदि दोनों में से एक जन मसीही नहीं है, तो पति या पत्नी दोनों में से जो भी मसीही हो उसकी सबसे बड़ी उम्मीद और लक्ष्य सही हो कि उसके साथी का मनपरिवर्तन हो जाए। इसके लिए मसीही साथी हर सम्भव प्रयास करेगा और प्रार्थना करेगा। यदि पति-पत्नी दोनों मसीही हो तो दोनों एक-दूसरे को प्रोत्साहित करेंगे कि वे ''डटे रहें।'' दोनों प्रेम से, धैर्य से क्षमा करते हुए एक-दूसरे में मसीही गुणों को बढ़ाने में सहायता करेंगे। दोनों एक-दूसरे को प्रोत्साहित करेंगे कि वे अपने गुणों का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए करें। सिखाने का हो या प्रचार करने का, या पुस्तकें सम्भालने, दन्त-चिकित्सा, बढ़ई का काम, बागबानी जैसे कामों के अपने गुणों से परमेश्वर की बड़ाई करें। वह ऐल्डर और डीकन के गुणों को बढ़ाने में उसकी सहायता कर सकती है। वह आतिथ्य सत्कार करने वाली बनने में उसकी सहायता कर सकता है और उसे प्रोत्साहित कर सकता है कि वह अधिक से अधिक लोगों को अपने घर बुलाए। वह उसे बाइबल क्लास में पढ़ाने के लिए प्रेरित कर सकता है, युवा स्त्रियों को अच्छी शिक्षा देकर या घर की देखभाल में हो, हस्तकला में, पढ़ाई लिखाई में, अपने गुणों को चाहे इनसे वह प्रभु के राज्य में अपना योगदान दे, उसकी सहायता कर सकता है।

यदि पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे की आत्मिक आवश्यकता को पूरा करने में सफल हो जाते हैं तो उन्हें इनमें न केवल यहां ही भरा-पूरा खुशहाल जीवन मिलेगा, बल्कि इसके बाद स्वर्ग में भी एक घर मिलेगा। वे सबसे बड़े पारिवारिक पुनर्मिलन अर्थात हर युग के पवित्र लोगों के एक-दूसरे और अपने स्वर्गीय पिता के साथ पुनर्मिलन में अपने स्वागत किए जाने की राह देख सकते हैं।

सारांश

एक घर जिसका आधार आत्मिक हो, वहां प्रेम ही मूल सिद्धांत है, जो पति-पत्नी के व्यवहार को निर्धारित करता है। प्रेम वहां पर्याप्त होगा क्योंकि पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नि:स्वार्थ प्रयास करेंगे। हर तरह की आवश्यकताएं पूरी की जानी चाहिए। शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और आत्मिक। यदि साथी दूसरे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहा है, तो घर खुशहाल है। इसमें रहने वालों को संतुष्टि और पूर्णतया मिलेगी, और विवाह बना रहेगा।

टिप्पणियां

[1]ऐसी ज़िम्मेदारी को स्वीकार न करने वाला व्यक्ति विवाह करने को तैयार नहीं होता। [2]मनोवैज्ञानिकों ने मानवीय आवश्यकताओं को विभिन्न चरणों में बांट दिया है। अब्राहम मेसलो ने कहा है कि मानवीय जीवों की शारीरिक आवश्यकताओं, सुरक्षा की आवश्यकताओं, लगाव और जुड़ाव की आवश्यकताएं, प्रतिष्ठा की आवश्यकताएं और आत्म-यथार्थ की आवश्यकताएं हैं। (फिलिप जी. ज़िम्बार्डो, ऐन्न एल. वेबर, रॉबर्ट एल. जॉनसन, *साइकॉलोजी-कोर कांसेप्टस,* 4था संस्क. [न्यू यॉर्क: एलिन एण्ड बेकन, 2003], 359-60.) स्पष्टतया यह पाठ मानवीय आवश्यकताओं को अलग ढंग से संगठित करता है। [3]यह तथ्य कि परमेश्वर ने स्त्री और पुरुष दोनों मसीही लोगों के लिए इकट्ठा होने के स्थान के रूप में कलीसिया को दिया है, सुझाव देता है कि वह लोगों की सामाजिक आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं करना चाहता। [4]ब्लैकटाउन चर्च ऑफ़ क्राइस्ट; सिडनी, ऑस्ट्रेलिया, 25-26 अप्रैल 1974 में दिया गया जेम्स बेयर्ड का प्रवचन।